ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 2 मार्च-अप्रैल 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक
डॉ. अश्विनी महाजन
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक
प्रो. प्रसून दत्त सिंह
महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी
डॉ. फूल चन्द
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

Scanned with OKEN Scanner

...प्रौद्योगिकी–डॉ॰ हिमांशु शेखर	4332
...विद्यार्थियों में मानवाधिकार की शिक्षा और जागरूकता का अध्ययन–डॉ॰ नरेश कुमार	4337
...बच्चों पर साहित्य की समीक्षा–डॉ॰ रचना राठौर; श्रीमती अंजु दोशी	4347
...उत्तराधिकार अधिनियम पर स्मृतियों के प्रभाव की प्रासंगिकता–डॉ॰ आनन्दा नन्द त्रिपाठी	4353
...दलित विमर्श–अनिता	4357
...में दलित विमर्श–रेनु	4360
...दयानन्द कृत यजुर्वेद भाष्य में पितृयज्ञ का स्वरूप–राहुल	4363
...निवारण में न्यायालय की भूमिका–आदर्श प्रताप राव	4366
...हिंसा एवं आत्मरक्षा–पारूल गुप्ता; डॉ॰ कुमार राजीव रंजन	4370
...महिलाओं की राजनीतिक सशक्तिकरण: विशेषकर बिहार के संदर्भ में–राहुल कुमार	4373
...के प्रति बदलते दृष्टिकोण का विश्लेषनात्मक अध्ययन (कोण्डागांव जिले के विशेष संदर्भ में) –डॉ॰ अमरनाथ शर्मा; डॉ॰ सुचित्रा शर्मा; हरीश कुमार चन्द्राकर	4376
...-कश्मीर में अनुच्छेद 370 की समाप्ति एवं उसके पश्चात संवैधानिक स्थिति–डॉ॰ भगत सिंह	4380
...साहित्य की समझ–डॉ॰ अरुण कुमार पाण्डेय	4386
...काव्य में मार्क्सवादी सामाजिक चेतना का भाव बोध–डॉ॰ वन्दना	4392
...के आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग की भूमिका - एक भौगोलिक विश्लेषण–डॉ॰ आभा शुक्ला	4397
...धरोहर: कटारमल सूर्य मन्दिर–रेखा बृजवासी	4404
...के भिवाड़ी औद्योगिक क्षेत्र में वायु प्रदूषण का भौगोलिक अध्ययन–पवन नैनावत; डॉ॰ अनिता माथुर	4408
...कहानी में नारीचेतना–पटेल जानकीबेन गंगाराम	4413
...का व्यापार एवं वाणिज्य: एक ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ॰ माला सिंह; अलका कुमारी	4415
...भारतीय ज्ञान की अनुसंधान पद्धति–रेखा	4419
...की रचनाओं में सामाजिक चेतना–छाया साव; डॉ॰ रेशमा अंसारी	4423
...हिंदी साहित्य में नारी विमर्श–डॉ॰ रीना डोगरा	4425
...जिले में जल संसाधन एवं उनकी समस्याएँ–डॉ॰ हर्षद रावल	4428
...विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी परिवेश के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का अध्ययन–प्रज्वलित कुमार यादव	4433
...नारीवाद: वर्ग, लिंग तथा विभाजन–डॉ॰ विक्की; डॉ॰ वन्दना; डॉ॰ दीपा त्यागी	4440
...विभिन्नता के संदर्भ में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन–डॉ॰ मुकेश कुमार सिंह; सुमन सिंह	4443
...विमर्श : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में–माहेश्वरी; डॉ॰ चन्द्र कुमार जैन	4448
...में गरीबी एक समस्या: और उसकी चुनौतियाँ–राकेश कुमार	4450
...महिला श्रमिकों की समस्याओं का क्षेत्रीय अध्ययन (सतना जिले के विशेष संदर्भ में)–डॉ॰ पूनम शर्मा; डॉ॰ आशीष शर्मा	4455
...की उत्पत्ति एवं विकास की प्रासंगिकता: एक अध्ययन–डॉ॰ कुमार आदित्य	4458
...में लैंगिक समानता: एक अध्ययन–डॉ॰ सुरेन्द्र कुमार	4461
जौनपुर जिले के माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना–दीपक कुमार चौहान	4467
माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन–डॉ॰ शारदा प्रशाद सिंह	4472
मिर्जापुर जनपद में ग्रामीण विकास का वर्तमान स्तर–डॉ॰ सन्त लाल	4476
ऑनलाइन शिक्षा का प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन –डॉ॰ नीलम सिंह परिहार; डॉ॰ श्याम सिंह गौर	4481
शिक्षक प्रशिक्षकों की पेशेवर प्रतिबद्धता–वत्सला तिवारी; जय श्री शुक्ला	4485
कोविड-19 का वैश्विक राजनीति पर प्रभाव–प्रहलाद कुमार मीना	4489

Scanned with OKEN Scanner

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन

डॉ० शारदा प्रशाद सिंह

विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग, रघुवीर महाविद्यालय थलोई भिखारीपुर कला जौनपुरउ०प्र०

सारांश- प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक तभी होगा जब माध्यमिक शिक्षा में शिक्षणरत् शिक्षक अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति पूर्ण प्रतिबद्ध होगे और तभी हमारी नयी शिक्षा नीति 2020भी सार्थक होगी। इसके लिये हमें दृढ़ निश्चय लेना कि हमारी बोद्धपरम्परायें, वैदिक संकल्पना तथा धार्मिक शिक्षा हमे एक सरस व्यक्ति बनाती थी न कि साक्षर दुर्भाग्य से पश्चिमीकरण का आधुनिकता को गलत ढ़ंग से परिभाषित किया गया जिससे व्यक्ति मात्र यत्रवत बनकर रह गया है। हमारी समितियां आयोग व शिक्षा नीतियां समय-समय पर भारतीय मूल्यों को पोषित करने वाले विन्दुओं पर चर्चा किया है परन्तु 100 प्रतिशत जमीन पर नही आयी उसके पीछे पश्चिमीकरण की आँधी तथा बेरोजगारी भागदौड़ ने वर्तमान में आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, चोरी, छिनैती तथा बलात्कार जैसी घटनाओ में बढ़ सी आई उसी से बचने व रोकने के लिये हमारे मानवीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने एक चिन्ता व्यक्ति की और एक दृढ़ संकल्प लेते हुये डॉ0 कस्तुरी रंजन की अध्यक्षता में नयी शिक्षा नीति 2020 को पास किया और लक्ष्य रखा कि बचपन मातृभाषा व मात्मूल्यों के आधार पर संस्कारित किया जाय अपने बौद्धिक तथा बौद्ध परम्पराओं को पोषित करे जिसके साथ अपने पुराने कौशल बड़ईगिरी, लोहारगिरी इत्यादि को आगे बढ़ाये साथ ही आधुनिकता की तरफ कम्प्यूटर तथा तकनीकि आई0सी0टी0 का ज्ञान दिया जाय। वैश्विकता को ध्यान में रखते हुये भारत के बच्चों को विश्व के शीर्ष तक पहुँचना ही हमारी दृढ़ शक्ति वाली शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य है। प्रस्तुत अध्ययन शिक्षादिों, विद्यार्थियों तथा व्यवसायिकयों के लिये मील पत्थर साबित होगा और हमारे युवा शिक्षकों के लिये प्रेरणा स्रोत तथा पथ प्रदर्शित करता रहेगा ऐसा शोधकर्त्ता को विश्वास है।

मुख्यशब्द-माध्यमिक विद्यालय, शिक्षण अभिक्षमता, मध्यमान, मानक विचलन, सी0आर0 परीक्षण इत्यादि।

प्रस्तावना-शिक्षा किसी भी व्यक्ति व समाज के लिये विकास की धुरी है और यह किसी भी राष्ट्र की प्राणवायु है। बिना इसके सभी बाते अधूरी सावित होती हैं। शिक्षा का सम्बन्ध सिर्फ साक्षरता से ही नहीं है बल्कि चेतना और उत्तरदायित्वों की भावना को जागृति करने वाला औजार भी है। किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके द्वारा हासिल किये गये शैक्षिक स्तर पर निर्भर करती है। शिक्षा के माध्यम से ही भारत के गांवों को सामाजिक परिवर्तन और ग्रामविकास की विभिन्न योजनाओं से जोड़ा जा सकता है। शिक्षा और मूल्य का गहरा सम्बन्ध है। मूल्यहीन शिक्षा वास्तव में शिक्षा ही नही है। मूल्यो की शिक्षा प्रदान कर बच्चों में अच्छे संस्कार भरे जाते हैं उनकी सुप्त चेतना को जगाया जा सकता है जिससे कि वे अपने विकास के साथ-साथ अपने समाज और देश के विकास में योगदान कर सकते हैं। शिक्षा का महत्व तभी है जब उन्हें आत्मसात् करने के लिये उच्च शिक्षण अभिक्षमता वालेशिक्षक उपलब्ध हो क्योंकि शिक्षा प्रदान करने के वे ही जिम्मेदार है। शिक्षक समस्या समाधान कौशल, महत्वपूर्ण सोच के तरीकों और आवश्यक विषयों की बुनियादी अवधारणाओं को पढ़कर भविष्य के लिये छात्रों को तैयार करते है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व-

समाज का शिक्षा पर प्रभाव और शिक्षा का समाज पर प्रभाव नकारात्मक नहीं जा सकता है क्योंकि समाज शिक्षा की व्यवस्था करता है समाज के स्वरुप का प्रभाव शिक्षा की प्रकृति पर पड़ता है जैसा समाज का स्वरुप होगा वह शिक्षा को वैसे ही व्यवस्थित करता है। भारत एक लोकतांत्रिक देश है तो शिक्षा की प्रकृति उद्देश्य उसके संगठन एवं वातावरण में लोकतांत्रिक आदर्श प्रकृति होती है। तानाशाही हो समाज की शिक्षा में अनुशासन व आज्ञाकारिता आदि पर बल दिया जाता है। समाजवादी देश की शिक्षा में समाजवादी तत्व व स्वरुप दिखायी देते हैं।

समाज की स्थिति व स्वरुप जैसे-जैसे बदलता जाता है वैसे-वैसे शिक्षा का रुप भी बदलता जाता है। भारत में आदि काल से धार्मिक शिक्षा दी जाती थी इसके पश्चात् समय के साथ आधुनिक युग आया और देश ने राजतन्त्र से प्रजातन्त्र में प्रवेश किया और शिक्षा में लोकतांत्रिक आदर्श एवं मूल्यों को समावश किया गया सामाजिक असमानता, कुरीतियों एवं आर्थिक असमानता को दूर वर्ग विशेप के लिये शिक्षा व्यवस्था से सबके लिये शिक्षा को मुख्य लक्ष्य माना गया और सभी को शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त कराया गया।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन-

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान-कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध-प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

Scanned with OKEN Scanner

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली-भाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है, यहाँ साहित्य समीक्षा का अर्थ दिया गया है।

साहिलअहमद खान व खान फरहतुमनिशा[23](2016):

''यह अध्ययन विवरणात्मक प्रकार का रायपुर जिले के 440 अध्यापकों पर सर्वे किया गया जिसमें 240 पुरुष व 200 महिला शिक्षक थी माध्यमिक के 240 में 130 पुरुष तथा 110 महिला थी जबकि उच्च माध्यमिक के 200 में 110 पुरुष व 90 महिला थी। शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता की माप जे0 पी0 और आर0पी0 श्रीवास्तव द्वारा निर्मित उपकरण से की गयी तथा समायोजन की माप एस0 के0 मंगल के उपकरण से हुयी। परिणाम व्यक्त करते है कि उच्च माध्यमिक के लिये सहसम्बन्ध बहुत कम था जबकि माध्यमिक स्तर पर शिक्षण अभिक्षमता व समायोजन के मध्य संहसम्बन्ध औसत था।''

मुदालियर अल्दुल्ला[24](2016):

''शिक्षा विभाग सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ काश्मीर के शिक्षा विभाग द्वारा अध्ययन किया गया। शिक्षण अभिक्षमता शिक्षक के उन गुणों, लक्षणों और कौशलों को सन्दर्भित करता है जो एक व्यक्ति के पास अपेक्षित रहता है या आत्म प्रयास के दौरान प्राप्त होता है शिक्षण की प्रवृत्ति पुनः उत्पन्न होती है। अतः शिक्षण अभिरुचि एक विशिष्ट योग्यता, क्षमता, रुचि, संतुष्टि और शिक्षण व्यवसाय में उपयुक्तता है। अध्यापन व्यवसाय में अभिवृत्ति का अर्थ व्यक्ति की भावनाओं व्यवहारों तथा व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता से है यदि शिक्षक प्रतिबद्ध है और रचनात्मक दृष्टिकोण रखता है तो निश्चित ही उसका प्रदर्शन प्रभावकारी होगा। रिचर्डसन (2003) के शब्दों में शिक्षा एक राष्ट्र निर्माण आन्दोलन है शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षकों की क्षमता और दक्षता पर निर्भर करती है यदि शिक्षक अच्छी तरह से प्रशिक्षित प्रेरित और पेशे के प्रति प्रतिबद्ध है तो सीखने में वृद्धि होगी। शिक्षण एक ऐसा पेशा है जिसे एक ऐसे व्यवसाय के रुप में वर्णित किया जा सकता है जो अत्यधिक विशिष्ट बौद्धिक सेवायें प्रदान करता है जो उच्च स्तर की रचनात्मक सोच की प्रवृत्ति रखते है और अनुसंधान में एक विस्तृत श्रृंखला का योगदान करती है। शिक्षण एक कला है जो एक व्यक्ति के एक प्रभावी पेशे के लिये तैयार करती हैं, ताकि अपने अधीनस्थों को सर्वोत्तम नेतृत्व शैली प्रदान कर सके। मनोवृत्ति उत्तेजनाओं के प्रति विशेष तरीके से प्रतिक्रिया करने की प्रवृत्ति है।''

अध्ययन के उद्देश्य- प्रस्तावित शोध में निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन को विस्तारित किया गया-

1. माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना-उद्देश्य की पूर्ति हेतु शून्य परिकल्पना निर्मित की गयी।

1. माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि- प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

जनसंख्या-जनसंख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण इकाईयों के निरीक्षण से होता है। इसमें कुछ इकाईयों का चयन करके न्यादर्श बनाया जाता है । प्रस्तुत शोध में जौनपुरजनपद केमाध्यमिक विद्यालयोंके शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र केक्रमशः 265शिक्षक तथा 135 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चुना गया है ।

न्यादर्शन (Sampling)- जनसंख्या (इकाई, वस्तुओं या मनुष्यों का समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछेक इकाइयों को चुन लिया जाता है तो इस चुनने की क्रिया को न्यादर्शन (sampling) कहते हैं, तथा चुनी हुई इकाइयों के समूह को न्यादर्श (Sample) कहते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में संभाव्यता न्यादर्शन के आधार पर आकड़ों को लिया गया है।

शोध उपकरण-शिक्षण अभिक्षमता मापनी:-

शिक्षण अभिक्षमता मापनी का निर्माण शोधकर्त्ता ने स्वयं किया है जिसके लिये कुल 68 कथन बनाया था। यह तीन बिन्दु मापनी सहमत, अनिश्चित तथा असहमत पर बना है। मानकीकरण हेतु 370 लोगों पर प्रशासित करके उन पर के 29% तथा नीचे के 27% लोगों के परीक्षण से प्रत्येक कथन का टी0 विश्लेषण किया जो .05 स्तर पर सार्थक रहा उसे चयनित किया गया इसमें कुल 50 कथन अन्तिम प्रारूप में चयनित हुये। परीक्षण की विश्वसनीयता गुणांक स्पिलिट हॉफ मेथड से 0.84 प्राप्त हुआ और जे0पी0 सिंह के शिक्षण अभिक्षमता मापनी से वैधता गुणांक 0.92 प्राप्त हुआ। मानक के रुप में टी0 परीक्षण को माना गया मापन हेतु सकारात्मक कथनों के लिये क्रम संख्या (2, 1, 0) (सहमत, अनिश्चित तथा असहमत) पर और नकारात्मक के लिये (0, 1, 2) था। परीक्षण के सकारात्मक कथन (1, 4, 5, 7, 9, 12, 13, 14, 15, 20, 22, 25, 28, 30, 31, 32, 33, 39, 40, 41, 42, 49, 50 = 23) तथा नकारात्मक कथन (2, 3, 6, 8, 10, 11, 16, 17, 18, 19, 21, 23, 24, 26, 27, 29, 34, 35, 36, 37, 38, 43, 44, 45, 46, 47, 48 = 27) है। न्यूनतम अंक 0 और अधिकतम अंक 100 आ सकता है।

निष्कर्ष-

पुरुष शिक्षक तथा महिला शिक्षिकाओं के शिक्षण अभिक्षमता सम्बन्धी सी0आर0 मूल्य का विश्लेषण।

Scanned with OKEN Scanner

तालिका-1

df (398) at .01 = 2.60

उपरोक्त विश्लेषण तालिका 4.1 से स्पष्ट है कि शिक्षण अभिक्षमता पर पुरुष शिक्षकों के मध्यमान 68.75 तथा मानक विचलन 15.24 जबकि महिला शिक्षिकाओं के मध्यमान 62.13 तथा मानक विचलन 19.36 है। मानक विचलनों की सहायता से अभिकलित मानक त्रुटि 1.83 प्राप्त हुयी। अभिकलित सी0आर0 मूल्य 3.63 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्र संख्या 398 के सार्थकता स्तर .01 पर सारणी मान 2.60 से अधिक है जिसके आधार पर बनायी शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।" निरस्त हो जाती है। जिससे स्पष्ट होता हैं कि पुरुष शिक्षकों में शिक्षण अभिक्षमता महिला शिक्षिकाओं की तुलना में अधिक होती है। इस परिणाम का समर्थन शर्मा (2016) का अध्ययन करता है।

प्रस्तुत परिणाम के सम्भवत: कारण है कि पुरुष शिक्षक बहिमुखी स्वभाव के होते है और समाज में विचरते रहते है उन्हें किसी तथ्य को स्पष्ट करना अच्छे से आता है।

परिकल्पना-2 ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता सम्बन्धी सी0आर0 मूल्य मूल्य का विश्लेषण।

तालिका-2

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	सी0आर0मूल्य
ग्रामीण शिक्षक	135	68.72	19.36	2.05	.283
शहरी शिक्षक	265	68.14	18.89		

df (398) at .01 = 2.60

उपरोक्त विश्लेषण तालिका 4.2 से स्पष्ट है कि शिक्षण अभिक्षमता पर ग्रामीण शिक्षकों के मध्यमान 68.72 तथा मानक विचलन 19.36 जबकि शहरी शिक्षकों के मध्यमान 68.14 तथा मानक विचलन 18.89 है। मानक विचलनों की सहायता से अभिकलित मानक त्रुटि 2.05 प्राप्त हुयी। अभिकलित सी0आर0 मूल्य .0283 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्र संख्या 398 के सार्थकता स्तर .01 पर सारणी मान 2.60 से कम है जिसके आधार पर बनायी शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।" स्वीकृत हो जाती है। जिससे स्पष्ट होता हैं कि ग्रामीण शिक्षकों व शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में समान होते है। इस परिणाम का समर्थन सिंह व कौर (2018) का अध्ययन करता है।

प्रस्तुत परिणाम के सम्भवत: कारण है कि शिक्षण अभिक्षमता व्यक्तिगत विशेषता होती है न कि क्षेत्रगत विशेषता है।

शोध की शैक्षिक उपयोगिता-शिक्षा के क्षेत्र में जो अनुसंधान किये जाते हैं उनका शैक्षिक जगत से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। शोध तथी सार्थक माना जायेगा जबकि उससे प्राप्त निष्कर्ष सार्थक हों तथा समस्या के समाधान में योगदान दें एवं भावी अनुसंधानकर्ताओं का मार्गदर्शन करा सकें। शिक्षा के क्षेत्र में किये गये शोधों के परिणामों व निष्कर्षों का वर्तमान समय में गतिमान शोधों पर व्यापक प्रभाव पड़ता है तथा पूर्व के परिणाम व निष्कर्ष वर्तमान में शोधों को एक नई दिशा प्रदान करते हैं।

किसी भी शोधकर्ता के लिए यह सम्भव नहीं होता है कि वह समस्या से सम्बन्धित सभी सीमाओं अथवा सभी क्षेत्रों को अपने अध्ययन में समाहित कर सके। समय, धन तथा साधनों की परिसीमाओं के कारण शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध का गहन अध्ययन किया है। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष व परिणाम भावी शोधकर्ताओं के लिए निश्चिम रूप से मददगार सिद्ध होंगे। नि:संदेह प्रस्तुत शोध के परिणामों के द्वारा माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमतासे सम्बन्धित बहुत महत्वपूर्ण व आवश्यक जानकारियाँ प्राप्त हुई हैं जो भावी अनुसंधानकर्ताओं के लिए शोध में सहायक होंगी परन्तु कुछ ऐसे भी प्रश्न है जो कि अब भी अनुत्तरित हैं जिनके समाधान के लिए अनुसंधान प्रयासों की आवश्यकता है।

Scanned with OKEN Scanner

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, आर0ए0 (2008): भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास, आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. भटनागर, डॉ0 ए0बी0 (2008): अधिगम एवं शिक्षण, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. अग्रवाल, डॉ0 नीता (2008): बाल विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
4. नागर, डॉ0 बीनू एवं राजपूत, डॉ0 आशा (2010): बाल विकास आगरा पब्लिकेशन, आगरा।
5. जायसवाल, सीताराम (2012): व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. श्रीवास्तव, डी0एन0 एवं पाठक, के0पी0 (2012): बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान, आगरा पब्लिकेशन, आगरा।
7. श्रीवास्तव, महेन्द्र नाथ एवं कुमार सतीश (2014):बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
8. श्रीवास्तव, डॉ0 डी0एन0 (2020): अनुसंधान विधियां, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
9. गुप्ता, प्रो0 एस0पी0 एवं गुप्ता, डॉ0 अलका, (2013): सांख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
10. राय, पारस नाथ (2008): अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
11. सिंह, अरूण कुमार (2017): मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, बनारस।

Scanned with OKEN Scanner